International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 28-12-2020; Accepted: 14-01-2021; Published: 05-02-2021
Volume 3; Issue 1; 2021; Page No. 09-10

प्रथम हरियाणवी फिल्म 'वीरा–शेरा'

दीपक राविश
पीएच. डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कु.वि.कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

सारांश
हरियाणवी सिनेमा का उद्भव अन्य भारतीय भाषाओं के सिनेमा की अपेक्षा देरी से हुआ। 28 दिसम्बर सन् 1895 को फ्रांस के ल्यूमियरे बंधुओं ने विश्व की पहली फिल्म को पर्दे पर प्रस्तुत किया। ल्यूमियरे बंधु इस आविष्कार के व्यावसायिक दोहन के प्रति बहुत सजग थे। इसलिए भारत को भी मनोरंजन के इस नए अवतार से परिचित होने में ज्यादा समय नहीं लगा। 7 जुलाई 1896 को भारत में सिनेमा का पहला शो प्रस्तुत किया गया। भारत में सिनेमा के जनक दादा साहब फाल्के माने जाते हैं। प्रथम भारतीय फिल्म के विषय में विवाद है।

मुख्य शब्दः सिनेमा, फिल्म, मनोरंजन, व्यावसायिक, भाषा

प्रस्तावना

हरियाणवी सिनेमा का उद्भव अन्य भारतीय भाषाओं के सिनेमा की अपेक्षा देरी से हुआ। 28 दिसम्बर सन् 1895 को फ्रांस के ल्यूमियरे बंधुओं ने विश्व की पहली फिल्म को पर्दे पर प्रस्तुत किया। ल्यूमियरे बंधु इस आविष्कार के व्यावसायिक दोहन के प्रति बहुत सजग थे। इसलिए भारत को भी मनोरंजन के इस नए अवतार से परिचित होने में ज्यादा समय नहीं लगा। 7 जुलाई 1896 को भारत में सिनेमा का पहला षो प्रस्तुत किया गया। भारत में सिनेमा के जनक दादा साहब फाल्के माने जाते हैं। प्रथम भारतीय फिल्म के विषय में विवाद है। सिनेमा समीक्षक संजय सहाय के अनुसार , ''पैदाइश को लेकर संशय है कि जन्मदाता रामचंद्र गोपाल दादा साहब तोरणे (13.04.1890–19.01.1960) थे, जिनकी फिल्म 'श्री पुंडलिक' 18 मई 1912 को मुम्बई के कोरोनेशन सिनेमेटोग्राफ थिएटर में रिलीज हुई थी या कि घुंडिराज गोविंद ददा साहब फाल्के, जिनकी 'राजा हरिश्चंद्र' उसी थियेटर में 3 मई 1913 को रिलीज हुई थी। उत्तर जो भी हो, एक दिन अवश्य मिल जाएगा।' [1].

6 अक्तूबर 1927 को न्यूयार्क में विश्व की पहली सवाक् फिल्म 'जाज सिंगर' प्रदर्शित हुई। इसके लगभग चार वर्ष बाद 4 मार्च सन् 1931 को भारत की पहली बोलती फिल्म अर्देशिर एम0 ईरानी निर्देशित 'आलम आरा' रिलीज हुई। इसके लगभग एक दशक बाद भारतीय भाषाओं के सिनेमा का उदय हुआ। भारतीय भाषाओं या हिन्दी से इतर भाषाओं के सिनेमा का क्षेत्रीय सिनेमा भी संकीर्ण अर्थों में कहा जाता है। 'इसी के साथ चौथे व पांचवे दशक में भारत की बांगला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, मराठी, कन्नड़ आदि भाषाओं में फिल्में बनाने का सिलसिला आरम्भ हुआ। 1955–56 में बंगाली सिनेमा में सत्यजीत राय उदित हुए। उन्होंने प्रगीतात्मक, मानवतावादी व समर्पित शैली के साथ भारतीय सिनेमा की तस्वीर ही बदल दी।'' [2] प्रथम हरियाणवी फिल्म 'बीरा शेरा' हरियाणा बनने के सात वर्ष बाद 7 मई, 1973 को प्रदर्शित हुई। इस फिल्म के निर्देशक प्रदीप ए. नैयर हैं।

'बीरा शेरा' में मध्यान्तर से पूर्व किसानी जीवन एवं किसानों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का मार्मिक चित्रण हुआ है। फिल्म का आरम्भ एक गांव के किसानों की दयनीय स्थिति के विश्वसनीय एवं मार्मिक दृश्यों से हुआ है। गांव के सभी किसान साहूकार दीनदयाल के कर्ज तले दबे हुए हैं। चतरू इसी गांव का एक किसान है। वह चाहता है कि गांव के किसान साहूकार के कर्ज ये मुक्त होकर खुशहाल जीवन व्यतीत करे। इस गांव में अकाल के कारण भूखमरी की स्थिति पैदा हो गया। फिल्म में कुछ स्थलों पर इसे बाढ़ कहा गया है परन्तु फिल्म के दृश्यों से स्पष्ट है कि वास्तव में ये बाढ़ नहीं अकाल है। इस आपदा से जहां सभी गांव वालों के प्राण संकट में है, वहीं साहूकार खुश हैं कि अब किसान उसके कर्ज के चंगुल से कभी नहीं निकल पायेंगे। गांव का एक किसान आत्महत्या कर लेता है क्योंकि उसका पांच–सात वर्श का बेटा बेटा भूख के कारण दम तोड़ गया था। चतरू से भी उसके परिवार की दयनीय दशा नहीं देखी जाती। एक रात वह पत्नी तथा दोनों बेटों को सोता हुआ छोड़कर शहर के लिए निकल पड़ता है। उसे उम्मीद है कि शायद शहर में उसे मजदूरी मिल जाए। दिल्ली में पहले वह मजदूरी करता है तथा बाद में एक फैक्टरी में चौकीदारी करने लगता है। उस फैक्टरी का मैनेजर कुछ वर्करों की मिलीभगत से गोदाम में से सामान चोरी करके बाहर बेचता है। एक रात जब चतरू की ड्यूटी गेट पर लगी हुई थी, तो उसे इसकी भनक लग गयी। उसे घायलावस्था में अस्पताल में भर्ती कर दिया गया। उस फैक्टरी का मालिक चतरू की ईमानदारी से प्रसन्न से कुछ रूपये ईनाम में देना चाहता है परन्तु वह मालिक को एक ट्रैक्टर देने को कहता है ताकि उसकी और गांव वालों की खेती में मदद हो सके। चतरू गांव पहुंचकर सबसे पहले गांव वालों को इकट्ठा करके सांझी खेती करने का आह्वान करता है ताकि भरपूर फसल हो सके। इस पंचायत में उसने अपना ट्रैक्टर भी गांव की सम्पति घोशित कर दिया। सभी गांव वाले चतरू के प्रस्ताव का एकमत से समर्थन करते हैं। किसानों की एकता देखकर साहूकार दीनदयाल घबरा गया। उसके आदमी चतरू के खेत में खड़ी फसल को आग लगा देते हैं। आग बुझाने की कोशिश में वह बुरी तरह झुलस गया। ट्रैक्टर के उपयोग तथा सांझी खेती से इस बार बम्पर पैदावार हुई। चतरू तथा गांव के अन्य किसानों ने साहूकार दीनदयाल का सारा कर्ज उतार दिया। कर्ज उतारने के बाद चतरू साहूकार के मुनीम से वहीं छीनते हुए कहता है, ''साहूकार मैं ले चाल्या या वहीं, कई सालां की पाप अर लूट–खसोट की निसानी। इब या मेरे गेल्यां चिता में जा कै राख हो ज्यागी।''[1] इसके कुछ समय बाद ही चतरू चल बसा।

जवान होकर चतरू का बड़ा लड़का शेरा खेती–बाड़ी का काम संभालने लगा जबकि छोटे लड़के बीरा की रूचि पढाई में है। बीरा स्कूली शिक्षा

पूरी करने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए दिल्ली जाने का निश्चय करता है। बीरा के आगे की पढ़ाई के लिए दिल्ली जाने की भनक जब साहूकार दिनदयाल को लगती है तो अपने आदमियों को उसका काम तमाम करने का हुक्म देता है। गांव से बाहर निकलते ही साहूकार को भेजे हुए लठैत तो भाग खड़े हुए परंतु शेरा की लाठी लगने से एक लठैत बुरी तरह से घायल हो गया। शेरा उस आदमी को मरा समझकर वहां से भाग खड़ा हुआ। साहूकार का लठैत हरिया अपने ही घायल आदमी को लाठियां मार–मारकर हत्या कर देता है तथा हत्या का आरोप शेरा पर लगा देता है। जब पुलिस शेरा को गिरफ्तार करने पहुंची तो वह पुलिस की गिरफ्त से भाग गया। पुलिस से छिपकर इधर–उधर भटक रहा शेरा एक दिन फूला डाकू के गिरोह के हत्थे चढ़ गया। डाकू शेरा को कैद कर लेते हैं। संयोगवश एक दिन डाकू साहूकार दीनदयाल की बेटी निर्मला को उछा लाते हैं। नशे में धुत्त फूला डाकू निर्मला से बलात्कार की कोशिश करता है। शेरा, निर्मला को बचाने के लिए फूला डाकू को गोली मार देता है। मरने से पहले फूला अपने अपराध के लिए शेरा से माफी मांगता है तथा उसे अपने गिरोह का सरदार बना देता है।

उधर दिल्ली से पढ़ाई पूरी करने के बाद बीरा गांव पहुंचता है। उसने पढ़ाई के साथ–साथ एन0सी0सी0 का प्रशिक्षण भी लिया है। बीरा और साहूकार की बेटी निर्मला एक–दूसरे से प्रेम करते है। बीरा जब निर्मला से मिलने पहुंचा तो निर्मला ने उसे सारी घटना बताई। तभी सीमा पर अचानक युद्ध शुरू हो जाता है। बीरा भारत माता की सीमाओं की रक्षा के लिए फौज में भर्ती हो गया। कुछ दिनों बाद साहूकार दीनदयाल गांव में ये झूठी अफवाह फैला देता है बीरा लड़ाई में शहीद हो गया। वह निर्मला की मर्जी के खिलाफ उसकी शादी तय कर देता है। जब निर्मला के भावी पति को इस बात का पता चलता है कि बीरा तथा निर्मला आपस में प्रेम करते हें तथा बीरा देश की रक्षा के लिए सीमा पर लड़ने गया है, तो वह इस शादी से मना कर देता है।

अंत में बीरा की कोई खबर न आने पर शेरा उसे ढुंढने सीमा पर चला गया। वहां उसे पता चलता है कि बीरा जीवित है तथा उसकी बहादुरी से प्रसन्न होकर सरकार ने उसे लेफ्टीनेंट बना दिया है। वापस लौटते समय शेरा शत्रु सेना के हत्थे चढ़ गया। वह शत्रु सैनिकों से उनके हथियार छिनकर उनकी चौकी को तबाह कर देता है। इस मुठभेड़ में शेरा को भी कई गोलियां लग गई। वह घायल अवस्था में किसी भारतीय सीमा में पहुंच गया। शहीद होने से पूर्व शेरा भारतीय सैनिकों को बताता है कि वह लेफ्टीनेंट बीरा का भाई है तथा शत्रु सेना की एक चौकी तबाह करके आया है। सभी गांववाले शहीद शेरा का नम आंखों से अंतिम संस्कार करते हैं। साहूकार दीनदयाल भी शेरा की अर्थी को कंधा देता है। निर्मला की शादी बीरा से हो जाती है। साहूकार तथा सभी गांव वाले एकजुट होकर गांव की तरक्की के लिए काम करने का संकल्प लेते है।

बीरा–शेरा को प्रथम हरियाणवी फिल्म माना जाता है। यह फिल्म श्वेत–श्यम है। फिल्म में बार–बार हरियाणा का गौरवगान किए जाने के बाबजूद इसे पूरी तरह से हरियाणवी फिल्म नहीं कहा जा सकता। विषयवस्तु के स्तर पर एक सीमा तक अवश्य इसे हरियाणवी फिल्म नहीं कहा जा सकता है परंतु ट्रीटमेंट के दृष्टिकोण से इसे पूरी तरह से हरियाणवी फिल्म नहीं कहा जा सकता। फिल्म की भाषा पूरी तरह से हरियाणवी नहीं है। यह खड़ी बोली तथा हरियाणवी का मिश्रण है। कई दृश्यों में पात्र हरियाणवी में संवाद बोलते–बोलते अचानक खड़ी बोली का प्रयोग करने लगते हैं। पारसी थियेटर के प्रभावस्वरूप कुछ संवादों में तुक का निर्वाह करने का प्रयास किया गया है। मध्यांतर से पूर्व जो किसानों की दयनीय दशा से संबंधित दृश्य दिखाए गए हैं वो विश्वसनीय तथा द्रवित करने वाले है। अकाल के दौरान गांव की गरीबी तथा भूखमरी का सजीव चित्रण हुआ है। किसानों की दुर्दशा के जिम्मेदार कारणों–कर्ज, साहूकार द्वारा शोषण, बड़ा परिवार, भाग्यवाद तथा आपसी फूट को भी उभारा गया है। बीरा और शेरा का पिता चतरू जिन दृश्यों में ईश्वर के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाता है, वे बहुत प्रभावशाली है।

फिल्म में महिला पात्र दामण तथा कुर्ते के स्थान पर वैसा घाघरा तथा कुर्ता पहने हुए है जैसा कि राजस्थानी महिलाएं पहनती हैं जबकि फिल्म की घटनाएं साफ तौर पर राजस्थान की सीमा से लगते किसी हरियाणवी क्षेत्र की नहीं है। फिल्म की नायिका निर्मला की वेशभूषा भी हरियाणवी लड़कियों की जरह न होकर पंजाबी लड़कियों जैसी है। इस फिल्म के आरम्भिक दृश्यों से ये स्पष्ट है कि बीरा और शेरा जिस क्षेत्र में रहते हैं वह मैदानी क्षेत्र है। षेरा की शवयात्रा के समय गांव में जिस तरह के घर दिखाए गए हैं, उनकी छतें समतल न होकर ढलवां हैं। ये घर किसी पहाड़ी क्षेत्र के हैं। युद्ध के दृश्य अवश्य यथार्थ के निकट हैं। इस फिल्म में कुल सात गीत हें, जिनमें एक रागनी 'पत्थर का दिल करके पढ़िये, लक्ष्मी मेरी कहाणी' भी शामिल है। सतपाल परखपुरिया के लिखे गीतों को आवाज महेन्द्रकपूर, कृष्णा काले, बेला सावरे और स्वयं सतपाल परखपुरिया ने दी है। संगीत बी0एन0 बाली तथा हरीश राणा ने दिया है।

संदर्भ सूची

1- हंस, सं0 राजेन्द्र यादव, फरवरी 2013, पृ0 65
2- कृष्णकुमार, रतू, सूचनातंत्र और प्रसारण माध्यम–इक्कीसवीं शताब्दी में बदलती भूमिका, पृ0 157
3- सूचना तंत्र और प्रसारण माध्यम–इक्कीसवीं शताबदी में बदलती भूमिका (खण्ड प्प) डॉ0 कृष्ण कुमार रतू प्रथम संस्करण–2001, मंगलदीप पब्लिकेशन्स, जयपुर (इण्डिया)
4- हंस, संपादक–राजेन्द्र यादव, पूर्णांक–316, फरवरी 2013 अक्षर प्रकाशन, प्रा0लि0, 2–36, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली–2
5- हरियाणवी सिनेमा–संदर्भ कोश, रोशन वर्मा लक्ष्य बुक्स, ए–52, एम0पी0 देवीलाल, पिंजौर–134102 (पंचकूला हरियाणा)
6- Haryana Review Editor in chief- Dr. KK Khendelwal, September 20 D, Samved, Sco No. 1371] Sector 17, Panchkula (Haryana)
7- WWW.Youtube.com-https://youtu.be/vxTjewiwarm